देवनागरी लिपि की विशेषताएं

- प्रज्ञा पाठक
हिंदी विभाग
एन.ए.एस.कॉलेज,मेरठ

लिपि, लिखित चिह्नों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से हम भाषा को रूपायित करते हैं.

देवनागरी लिपि हिंदी, संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की लिपि होने के साथ-साथ मराठी तथा नेपाली भाषा की भी लिपि है.

देवनागरी की विशेषताएं

वर्णमाला का वर्गीकरण

स्वर और व्यंजन
स्वर-ह्रस्व और दीर्घ
मूल स्वर-संयुक्त स्वर

व्यंजन-स्पर्श और अनुनासिक
वर्ग विभाजन- क च त ट प
घोष-अघोष
अल्पप्राण-महाप्राण

लिपि चिह्नों के नाम ध्वनि के अनुरूप

देवनागरी लिपि में लिपि चिह्न जिस ध्वनि का द्योतक है उसका नाम भी वही है -आ,ओ,क,त.प इत्यादि.
रोमन लिपि में चिह्नों के नाम निम्नवत भी काम करते हैं -

लिपि चिह्न नाम का या उसकी प्रथम ध्वनि का काम करता है (A,B,D,G,J)

लिपि चिह्न प्रायः दूसरी ध्वनि का काम करता है (F,I,L,M,N,R)

लिपि चिह्न नाम में आई ध्वनि का काम न करके किसी अन्य ध्वनि का काम करता है (H,A,C,W)

एक ध्वनि के लिए एक लिपि चिह्न

नागरी में क के लिए क, ख के लिए ख

रोमन में क के लिए K,C,CH,CK

रोमन में एक लिपि चिह्न से एकाधिक ध्वनियों की भी अभिव्यक्ति- Put, But .

लिपि चिह्नों की पर्याप्तता

स्वर
व्यंजन
मात्रा

ह्रस्व तथा दीर्घ के लिए स्वतंत्र चिह्न

अ -आ , इ -ई, उ -ऊ

मात्राओं का प्रयोग

व्यंजन के साथ 'अ' के अतिरिक्त अन्य सभी स्वरों का मात्रा रूप में प्रयोग

नागरी के व्यंजन चिह्नों की आक्षरिकता

व्यंजन चिह्न व्यंजन मात्र नहीं व्यंजन और 'अ' स्वर का संयोग

उच्चारण की दृष्टि से सामान लिपि चिह्नों में समानता

क-ख,प-फ, ब-भ, आदि

सुपाठ्यता

जो लिखा है वही पढ़ा जायेगा .

सन्दर्भ-

डॉ .सतीश कुमार रोहरा - भाषा एवं हिंदी भाषा
डॉ भोलानाथ तिवारी- हिंदी भाषा